अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

इस जीवन में एकमात्र खुशहाली यही है कि दूसरों को प्यार करें और दूसरों से प्यार पाएं...
...जॉर्ज सैंड, फ्रेंच उपन्यासकार

आलोक वर्मा ने नाटकीय तरीके से इस्तीफा भले ही दे दिया, पर नहीं भूलना चाहिए कि उन्हें हटाने का फैसला करने वाली उच्च स्तरीय समिति में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी थे और उनके खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच जारी रहेगी।

संस्था का क्षरण

प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली उच्च स्तरीय समिति द्वारा बहुमत फैसले से आलोक वर्मा को निदेशक के पद से हटाए जाने, और बाद में खुद वर्मा के इस्तीफा देने के फैसले फौरी तौर पर चाहे जितने भी नाटकीय लगें, ये वस्तुतः सीबीआई नाम की संस्था के क्षरण के ही दुखद सुबूत हैं। जिस केंद्रीय जांच एजेंसी पर उच्च स्तर पर होने वाले भ्रष्टाचार की जांच का गुरु गंभीर दायित्व है, खुद उसके प्रमुख को ही भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों के कारण पद से हटाना पड़ा है! सर्वोच्च न्यायालय ने भले ही दो दिन पहले आलोक वर्मा को सीबीआई निदेशक के पद पर फिर से बहाल करने का फैसला दिया था, लेकिन शीर्ष अदालत का वह निर्णय वर्मा की निर्दोषिता का प्रमाण नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया का पालन भर था। वर्मा की बहाली के साथ उसने दो शर्तें लाद दी थीं : एक, वह नीतिगत फैसले नहीं ले पाएंगे, और दूसरा, उनको पद पर बनाए रखना उच्च स्तरीय समिति के फैसले पर निर्भर करेगा। ऐसे में, समिति ने सीवीसी द्वारा वर्मा पर लगाए गए गंभीर आरोपों को देखते हुए, जिनमें से कुछ में तो उन्हें प्रथम दृष्टया दोषी भी पाया गया है, उन्हें सीबीआई निदेशक जैसे संवेदनशील पद से हटाने का फैसला लिया, तो इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है। तब तो और नहीं, जब प्रधानमंत्री के साथ-साथ प्रधान न्यायाधीश द्वारा नामित न्यायमूर्ति एके सीकरी भी वर्मा को हटाने के पक्ष में थे। वर्मा ने इस्तीफा देकर भले ही खुद को शहीद बताने की कोशिश की है, लेकिन इसे भुलाया नहीं जा सकेगा कि सीबीआई के पूरे इतिहास में पद से हटाए जाने वाले वह पहले निदेशक हैं। इतना ही नहीं, खुद को नैतिक साबित करने की कोशिश के बावजूद अपने खिलाफ होने वाली भ्रष्टाचार की जांच से वह बच नहीं पाएंगे। सीबीआई में व्याप्त यह क्षरण जितना स्तब्ध करने वाला है, इसका राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश उतनी ही दुर्भाग्यपूर्ण और चिंतनीय है। ऐसे में, सरकार पर इस संस्था की खोई हुई गरिमा बहाल करने की बड़ी जिम्मेदारी है, क्योंकि ठीक इसी समय दिल्ली उच्च न्यायालय ने सीबीआई के विशेष निदेशक राकेश अस्थाना के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच जारी रखने का फैसला दिया है। जाहिर है कि सरकार को सीबीआई के नए निदेशक की नियुक्ति करते हुए बेहद सावधानी का परिचय देना होगा।

बदल जाएगी आरक्षण की पूरी बहस

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए आरक्षण का जन्म हुआ था। लेकिन आर्थिक आधार पर दस फीसदी आरक्षण की व्यवस्था कर सरकार ने आरक्षण के सिद्धांत को ही सिर के बल खड़ा कर दिया है।

चंद्र भान प्रसाद
राजनीतिक विश्लेषक

जहां तक मुझे याद है, हाई स्कूल से लेकर अभी कुछ दिन पहले तक सवर्ण समाज के जो हमारे मित्र हैं, वे यही पूछते रहे हैं कि आरक्षण की वजह से क्या मेरिट का हनन नहीं होता है। शायद ही कोई अनुसूचित जाति के छात्र, कर्मचारी या अफसर, जिसने आरक्षण का लाभ लिया हो, उसे जीवन में ऐसे प्रश्नों का अनगिनत बार जवाब न देना पड़ा हो। यूनिवर्सिटी हो, कॉलेज हो या इंजीनियरिंग-मेडिकल कॉलेज-सभी जगह अनुसूचित जाति के छात्रों को कोटा बॉयज कहा जाता है। बाबा साहब भीमराव आंबेडकर ने आरक्षण को संरक्षण कहा था। उन्होंने इसे सिद्ध करने के लिए यह उदाहरण दिया कि किस तरह से 1854 में जब मैकाले की ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली लागू हुई, तो अनुसूचित जाति के बच्चों को भी स्कूलों में प्रवेश का अधिकार मिला। अनुसूचित जाति के बच्चों का दाखिला शुरू हुआ, लेकिन पूरे देश में उनके दाखिले के विरुद्ध दंगे शुरू हो गए। जगह-जगह उन्हें पीटकर खदेड़ दिया गया। कई जगह तो उनकी बस्तियों में आग लगा दी गई और धमकाया गया कि अगर अपने बच्चों को स्कूल भेजा, तो ऐसी ही सजा दी जाएगी। नतीजतन ब्रिटिश सरकार ने अनुसूचित जाति के बच्चों की सुरक्षा और स्कूलों में दाखिला दिलाने के लिए पुलिस तैनात की। फिर सवर्ण अभिभावकों ने अपने बच्चों को स्कूलों से निकाल लिया और स्कूल बंद करवा दिया। अनुसूचित जाति के बच्चों के साथ अपने बच्चों को पढ़ने देने के बजाय उन्होंने इसलिए स्कूल बंद करवाया, ताकि अनुसूचित जाति के बच्चे न पढ़ें, भले उनके अपने बच्चे भी अपढ़ क्यों न रह जाएं।

ब्रिटिश सरकार ने फिर एक आदेश जारी किया कि धर्म या जाति के आधार पर किसी भी बच्चे को दाखिला देने से स्कूल मना नहीं कर सकता है। इससे स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ, लेकिन जगह-जगह झगड़े चलते रहे। अंत में 1882 में डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर की अध्यक्षता में इंडियन एजुकेशन पर एक कमीशन बना। उस समय अनुसूचित जाति को वंचित वर्ग कहा जाता था। हंटर कमीशन ने एक जगह लिखा है कि वंचित वर्ग के बच्चों के एडमिशन के खिलाफ जगह-जगह दंगे हो रहे हैं और ब्रिटिश सरकार के पास इतने सुरक्षा बल नहीं हैं कि उन्हें देश भर में तैनात किया जाए। जब इसी देश के लोग अपने ही देश के बच्चों को पढ़ने नहीं दे रहे हैं, तो बेहतर है कि वंचित वर्ग के बच्चों के लिए अलग-अलग स्कूल बना दिए जाएं। तो हंटर कमीशन के इस सुझाव के बाद ही अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए अलग स्कूल खुले, जिनमें से कुछ अब भी चल रहे हैं।

डॉ आंबेडकर का कहना था कि चूंकि समाज अनुसूचित जाति को पढ़ने से रोकता है, इसलिए कानून बनाकर उनके लिए सीटें सुरक्षित की जाएं। उन्हें अछूत माना जाता है, भेदभाव किया जाता है, इसलिए नौकरियों में भी अनुसूचित जाति और जनजातियों का हिस्सा सुरक्षित कर दिया जाए। उनका कहना था कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोग सदियों से उपेक्षित, उत्पीड़ित रहे हैं, इसलिए उनके लिए आरक्षण की व्यवस्था जरूरी है। हम लोगों ने खुद अपने जीवन में अनुभव किया है कि शिक्षा, नौकरी आदि में अनुसूचित जाति के लोगों के साथ भेदभाव होता है।

डॉ आंबेडकर ने भी कहा था और हमने भी अपने जीवन में देखा है कि अनुसूचित जाति को गरीबी के कारण नहीं, बल्कि अनुसूचित होने की वजह से प्रताड़ित किया जाता है। तीन-चार साल पहले प्रतापगढ़ में अनुसूचित जाति के दो सगे भाइयों ने आईआईटी की परीक्षा सामान्य कोटे में पास की। यह खबर अखबारों में छपी, तो तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने उन्हें पुरस्कृत किया। जब वे लड़के अपने घर लौटे, तो शाम को उनके घर पर गांववालों ने पथराव किया। जुलाई, 2018 में अलीगढ़ के पास कासगंज में अनुसूचित जाति के एक दुल्हे को घोड़े पर चढ़कर विवाह करने जाने का सवर्णों ने विरोध किया। अंततः पुलिस और इलाहाबाद हाई कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा। ऐसी घटनाएं अक्सर होती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए आरक्षण का जन्म हुआ।

अब इस देश के सामने एक नैतिक प्रश्न है कि जो सवर्ण समाज अभी तक आरक्षण का मखौल उड़ाता था, मेरिट का सवाल उठाता था, आरक्षण का लाभ लेने वालों को निकम्मा और अयोग्य ठहराता था, अब वह बताए कि मेरिट का क्या होगा। जो गरीब सवर्ण हैं, उन्हें क्या गरीबी की वजह से सामाजिक उत्पीड़न, भेदभाव और प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा? अगर गरीबी के कारण उनके बच्चों के साथ भेदभाव नहीं हुआ, तो फिर उनके लिए आरक्षण का क्या तुक बनता है। क्या गरीब सवर्णों के लड़कों को अपनी शादी में घोड़े पर चढ़ने या गरीब सवर्णों को सार्वजनिक नल से पानी लेने से कभी मना किया गया है? गरीबी बहुत खराब चीज होती है, चाहे किसी की भी हो, उसका निदान अवश्य होना चाहिए। लेकिन उसका निदान आरक्षण नहीं हो सकता, क्योंकि आरक्षण की व्यवस्था किसी और काम के लिए बनी है।

आर्थिक आधार पर दस फीसदी आरक्षण की व्यवस्था कर सरकार ने आरक्षण के सिद्धांत को ही सिर के बल खड़ा कर दिया है। ऐसा करके सरकार ने एक और खतरे का संकेत दिया है, जिसका सीधा असर अनुसूचित जाति और जनजाति पर पड़ने वाला है। कल भाजपा सरकार यह भी कह सकती है कि जो दो-तीन पीढ़ी से आरक्षण के लाभार्थी हैं, उनका आरक्षण खत्म कर दिया जाए। जब आंबेडकर से लोगों ने पूछा कि नौकरियां कम हैं, तो आरक्षण से कितने अनुसूचित जाति व जनजाति के लोगों का भला होगा, तो उन्होंने कहा था कि आरक्षण कोई गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम नहीं है, आरक्षण वंचित तबकों को सत्ता व्यवस्था में प्रतिनिधित्व दिलाने के लिए भी बना है। आरक्षण से वंचित वर्गों में नए रोल मॉडल पैदा होंगे। आर्थिक आधार पर आरक्षण का तर्क आंबेडकर के सिद्धांत के विपरीत होगा। अब जबकि आर्थिक आरक्षण का विधेयक संसद से पारित हो गया है, तो सवर्ण समाज से पूछा जाना चाहिए कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के साथ जो दुर्व्यवहार आज भी होता है, क्या उसे खत्म करने के लिए सवर्ण समाज का गरीब तबका वंचित समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करेगा। और दूसरा, जो नैतिक सवाल है कि क्या अब सवर्णों में जो गरीब तबका है, अनुसूचित जाति और सवर्णों के बीच रिश्तेदारी शुरू करने के लिए आंदोलन चलाएगा।

जब गुरुद्वारा हमारे रहने का ठिकाना था

अपनी कहानी

>> ऋषभ पंत

दो साल पहले आईपीएल के दौरान मेरे पिता गुजर गए थे। उनका अंतिम संस्कार करने के अगले ही दिन मैं अपनी टीम से जुड़ गया था। मैं बिल्कुल वैसा ही खिलाड़ी बनने की कोशिश करूंगा, जैसा कि मेरे पिता ने कभी सोचा था।

क्रिकेटर बनने के मेरे सपने में मेरे पिता की इच्छाओं का भी हिस्सा था। वह चाहते थे कि मैं बड़ा होकर देश के लिए क्रिकेट खेलूं। इक्कीस साल पहले मेरा जन्म हरिद्वार के रुड़की में हुआ था। लेकिन मेरे क्रिकेटर बनने की राह में सबसे बड़ा रोड़ा उत्तराखंड में सुविधाओं का अभाव था। जब मैंने खेलना शुरू किया था, तो राज्य की आधिकारिक रणजी टीम भी नहीं थी, जिसके सहारे आगे बढ़ा जा सके। इसलिए मेरे लिए जरूरी था कि मैं अपने राज्य से निकलकर दिल्ली का रुख करूं।

जब उत्तराखंड से दिल्ली आया

शुरू में पारिवारिक परिस्थितियां ऐसी थीं कि मैं दिल्ली में रहकर तैयारी नहीं कर सकता था। नतीजतन मैं तड़के बस पकड़कर पांच घंटे का सफर करके दिल्ली आता, ताकि आठ बजे के अभ्यास सत्र में शामिल हो सकूं। लेकिन यह मुश्किलों भरा सफर रोज कर पाना मुमकिन नहीं था। मां का साथ मिला और पिता ने हम दोनों को दिल्ली भेजने का फैसला कर लिया। क्रिकेट सीखने के लिए जब रुड़की से निकलकर मैं मां के साथ दिल्ली आया था, तो हमारे पास इस शहर में रहने की कोई जगह नहीं थी। दिल्ली में हमारा पहला ठिकाना बना मोती बाग का गुरुद्वारा। इस तरह जब मैं अपने सपने पूरे करने के लिए मैदान में पसीना बहाता था, तो मेरी मां गुरुद्वारे में सेवा किया करती थीं।

बाहरी होने का धब्बा

दिल्ली में मैंने शिखर धवन समेत कई मशहूर क्रिकेटरों के कोच रहे तारक सिन्हा की अकादमी में प्रवेश लिया। उसी दौरान मुझे क्रिकेट संघ की राजनीति के चलते राजस्थान से खेलने की सलाह मिली। मैं वहां गया भी, लेकिन बाहरी होने के कारण ज्यादा दिन टिक नहीं पाया। बाहरी तो मैं दिल्ली के लिए भी था, लेकिन यहां राजस्थान जैसी दिक्कत नहीं थी। बस यहां की स्थानीय प्रतिभाओं के बीच पहचान बना पाना थोड़ा मुश्किल काम था। दिल्ली वापस लौटने के बाद मैंने अपने प्रयासों में और तेजी लाई। 2015 में मैंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में आगाज किया, जबकि उसी वर्ष विजय हजारे ट्रॉफी के जरिये मेरे लिस्ट-ए कॅरिअर का आगाज हुआ। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में मुझे बड़ी पहचान तब मिली, जब मैंने 2016-17 रणजी सत्र में महाराष्ट्र के खिलाफ 308 रनों की पारी खेली थी। उस वक्त मैं देश का तीसरा सबसे कम उम्र का खिलाड़ी बना था, जिसने तिहरा शतक जड़ा हो।

पिता के सपनों का क्रिकेटर बनने की कोशिश

इसके बाद तो मैंने पीछे मुड़ के नहीं देखा। भारत के लिए अंडर-19 टीम में खेलना और आईपीएल में किए गए कुछ अच्छे प्रदर्शनों के बल पर मैंने जल्द ही राष्ट्रीय टीम में जगह बना ली। दो साल पहले आईपीएल के दौरान मेरे पिता गुजर गए थे। उनका अंतिम संस्कार करने के अगले ही दिन मैं अपनी टीम से जुड़ गया था। अगले मैच में मैं न सिर्फ खेला, बल्कि मैंने अर्ध शतक भी जड़ा। मैं खुशकिस्मत हूं कि बहुत जल्द ही मुझे देश के लिए सफेद जर्सी में खेलने का मौका मिल गया है। अब मैं बिल्कुल वैसा ही खिलाड़ी बनने की कोशिश करूंगा, जैसा कि मेरे पिता ने कभी सोचा था।

-हाल ही में ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट शतक लगाने वाले भारत के पहले विकेटकीपर के साक्षात्कारों पर आधारित।

सूत्र

>> कादरी गोपालनाथ

सैक्सोफोन ने दिखाई सफलता की राह

मेरा जन्म कर्नाटक में हुआ। मेरे पिता कर्नाटक संगीत के संगीतकार थे और उन्होंने ही नादस्वरम से मेरा परिचय कराया। बचपन में ही संगीत के उच्च स्तरीय अध्ययन के बाद मैंने मंगलोर में संगीत का अध्ययन करने का फैसला कर लिया था। पंद्रह वर्ष की उम्र में पहली बार मैंने एक पश्चिमी वाद्ययंत्र के बारे में जाना, जिसे सैक्सोफोन कहा जाता है। तब तक मैं उससे अनजान था। मैसूर रॉयल पैलेस में एक ब्रिटिश बैंड के कार्यक्रम में मैंने उस वाद्ययंत्र को देखा, तो उस चमकीले पीतल के वाद्ययंत्र पर मेरी निगाहें टिक गईं और जैसे ही उसका संगीत मेरे कानों में पहुंचा, मैंने संकल्प ले लिया कि एक दिन मैं इस वाद्ययंत्र का उस्ताद बनूंगा। इसमें मेरे पिता ने मेरा साथ दिया। उन्होंने मेरे लिए पुलिस बैंड के एक सदस्य से आठ सौ रुपये में एक सैक्सोफोन खरीदा। उस समय आठ सौ रुपये एक बड़ी राशि हुआ करती थी। नादस्वरम और भारतीय संगीत में गहरी प्रवीणता के साथ मैंने करीब बीस वर्ष भारतीय कर्नाटक संगीत में सैक्सोफोन को शामिल करने के लिए साधना की। टीवी गोपालकृष्णन, सर बालाकृष्ण पिल्लई जैसे गुरुओं के सान्निध्य में मैंने सैक्सोफोन सीखा और कर्नाटक संगीत और राग में खुद को डुबो दिया। अपने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुरूप मैंने सैक्सोफोन को संशोधित भी किया। 1977 में मैने सैक्सोफोन के साथ पहला कार्यक्रम चेम्बई मेमोरियल ट्रस्ट, त्रिवेंद्रम में पेश किया। हालांकि, मेरी असली क्षमता और प्रतिभा तब उजागर हुई, जब 1980 के दशक में मैंने मुंबई के जैज यार्टा फेस्टिवल में अमेरिकी जैज संगीतकार और चार्ल्स मिंगस के पूर्व छात्र जॉन हैंडी के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। लाइव कार्यक्रम और रिकॉर्डिंग के अलावा मैंने कई फिल्मों में संगीत भी दिया। *डुएट* फिल्म में वाद्य ध्वनि मेरी सबसे बड़ी सफलता बनी, जिसके बाद देश भर में मुझे पहचाना जाने लगा। इससे मुझे बसों और ट्रेनों में चलने में मुश्किल होने लगी, लेकिन लोगों का इतना प्यार पाकर मुझे खुशी भी हुई। मेरे लिए संगीत ही जीवन है। सैक्सोफोन का वादन एक अलग तरह की खुशी देता है, इससे जो तरंगें निकलती हैं, वे हमेशा सकारात्मक एवं शरीर के लिए लाभप्रद होती हैं। मेरे संगीत को लोग इसलिए पसंद करते हैं, क्योंकि मैं उसमे बहुत ज्यादा फ्यूजन डालता हूं। किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए नई-नई चीजें जोड़ना और समय के साथ तालमेल बिठाना जरूरी होता है।

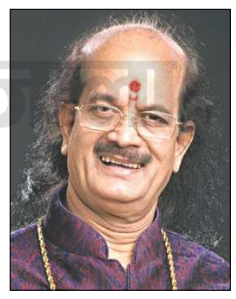

किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए नई-नई चीजें जोड़ना और समय के साथ तालमेल बिठाना जरूरी होता है।

फैक्ट फाइल

अमेरिका-मैक्सिको सीमा

>> मैक्सिको-अमेरिका के बीच बैरियर

दोनों देश की सीमा 3,145 किलोमीटर लंबी है, जिसमें से 1,052 किलोमीटर तक बैरियर है।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अवैध अप्रवासियों को रोकने के लिए मैक्सिको से सटी सीमा पर दीवार खड़ी करने की घोषणा की है, जिस पर काफी विवाद हो रहा है। ट्रंप ने राष्ट्रपति चुनाव के अपने अभियान में मैक्सिको सीमा पर दीवार खड़ी करने का आश्वासन दिया था। दोनों देशों की सीमा पर बैरियर लगे हुए हैं जिन्हें यूएस-मैक्सिको बैरियर के नाम से जाना जाता है। अवैध अप्रवासियों को रोकने के लिए वहां सेंसर, कैमरे और अन्य उपकरण भी लगे हुए हैं। दोनों देश की सीमा 3,145 किलोमीटर लंबी है और उसमें से करीब 1,052 किलोमीटर तक बैरियर लगे हुए हैं। हालांकि ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद नया बैरियर नहीं बना है।1994 में मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध अप्रवासियों को रोकने के लिए तीन ऑपरेशन चलाए गए थे और उसी के तहत बैरियर का निर्माण शुरू हुआ। ये तीन ऑपरेशन थे, कैलिफोर्निया में ऑपरेशन गेटकीपर, टेक्सास में ऑपरेशन होल्ड द लाइन और एरिजोना में ऑपरेशन सेफगार्ड। 1821 में मैक्सिको स्पेन से स्वतंत्र हुआ था। इसके अगले तीस वर्षों तक अमेरिका-मैक्सिको सीमा को लेकर कोई विवाद नहीं था। पर 1845 में अमेरिका और मैक्सिको के बीच हुए युद्ध के बाद से दोनों देशों में सीमा विवाद शुरू हो गया। ट्रंप सीमा पर करीब 1,610 किलोमीटर लंबी 18 से 30 फीट ऊंची दीवार खड़ी करना चाहते हैं। ट्रंप की इस योजना का अमेरिकी कांग्रेस में विरोध हो रहा है।

मनीला सिटी जेल का हाल

मनीला की ठसाठस भरी सिटी जेल में आम कैदियों को शौचालय, फर्श या सीढ़ियों पर रात बितानी पड़ती है।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए ऑरोरा एलमेंड्रेल

फिलीपींस की राजधानी मनीला की सिटी जेल में क्षमता से अधिक कैदी हैं। ऐसे में, वहां के कैदियों के लिए बिस्तर बनाने का अर्थ है बगैर खिड़की वाले शौचालय के पानी और कीचड़ भरे क्षेत्र में पोछा लगाकर छोटा-सा गत्ता बिछाना और उस पर छह कैदियों का एक दूसरे से सटकर सो जाना। हाल ही में उमस भरी एक रात को जेल के अंदर पसीने और दम घुटने के कारण कैदियों की हालत खराब हो गई, क्योंकि 170 लोगों की क्षमता वाली जगह में 518 कैदियों को ठूंस दिया गया था। 2016 से राष्ट्रपति रोड्रिगो ने नशेड़ियों के खिलाफ सख्त अभियान चलाया है। तभी से जेलों में कैदियों के लिए जगह कम पड़ रही है। वर्ल्ड प्रिजन ब्रीफ की सूची में फिलीपींस की जेलों को सबसे भीड़ भाड़ वाली जेल बताया गया है।

जेल के कैदियों के लिए रात की नींद सबसे कीमती चीज है। अगर कोई कैदी ठीक-ठाक कीमत अदा करता है, तो उसे एक क्यूबिकल में सोने की जगह मिल सकती है-भीड़-भाड़ से अलग यह प्लाइवुड से बनी जगह होती है, जिस पर पर्दा लगा होता है, और जिसके अंदर दो लोग आराम से सो सकते हैं। अगर पैसे न हों, तो फिर फर्श, शौचालय या सीढ़ियों पर जगह मिलती है। सीढ़ियों पर सोना खतरनाक है, क्योंकि ऊपर की सीढ़ी पर लेटा कोई कैदी गिरता है, तो नीचे की सीढ़ियों पर लेटे कैदियों को भी अपने साथ नीचे ले जाता है और उस दौरान घायल होने की आशंका रहती है।

मनीला सिटी जेल में बंद कैदियों में से कुछ को ही अदालत ने दोषी साबित किया है, बाकी ज्यादातर विचाराधीन कैदी ही हैं। अलबत्ता विचाराधीन कैदियों को भी महीनों, बल्कि वर्षों तक जेल में रहना होगा, क्योंकि अदालतों में मुकदमों का अंबार है। फिलीपींस में कदम-कदम पर भ्रष्टाचार है। जेल में कैद एक किशोर बताता है कि 2017 में उसके मां-बाप ने उसे घर से निकाल दिया, क्योंकि वह गे था। 15 साल का होने के कारण उसे कम सजा मिलती। लेकिन बालिग साबित कर और सार्वजनिक स्थल पर हिंसा फैलाने का झूठा आरोप लगाकर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के दो महीने बाद ही मेडिकल जांच में उसके नाबालिग होने की सच्चाई सामने आ गई। इसके बावजूद वह मनीला सिटी जेल में ही है, क्योंकि जेल अधिकारियों को उसकी रिहाई के कागज नहीं मिले हैं! प्रोफेसर नारग की कहानी भी ऐसी ही है, जिन्हें विचाराधीन कैदी के तौर पर सिटी जेल में छह साल बिताने पड़े। 2002 में रिहाई के समय वह कैदियों के गैंग का मेयर बन चुके थे। चूंकि फिलीपींस की जेलों में कैदियों की संख्या संतरियों की तुलना में अधिक है, इस कारण हर जेल में कैदियों का मजबूत गैंग काम करता है। सिटी जेल में पांच गैंग सक्रिय हैं। पिछले महीने जेल प्रशासन ने एक गैंग के सरगना बिउबॉय मेनडियोला के सेल की तलाशी ली, तो उसके पास से 13,700 डॉलर के अलावा क्रिसमस पार्टी के लिए मंगाए गए कुछ सूअर और सैकड़ों मुर्गे भी मिले थे। चूंकि मेनडियोला की जेल से रिहाई होने वाली है, इसलिए वह अपने गैंग के नए सरगना की तलाश में है।

इस हफ्ते के शब्द

फेलिक्स त्सेसीकेदी

कांगो के विपक्षी दल के नेता ने राष्ट्रपति चुनाव में जीत दर्ज की है, पर वहां के कैथोलिक चर्च ने नतीजे को खारिज कर दिया है।

कोल्यूज़न (COLLUSION)

यह शब्द अमेरिकी मीडिया में सुर्खियों में है, क्योंकि ट्रंप ने राष्ट्रपति चुनाव में धांधली को फेक न्यूज बताया है। इसका अर्थ होता है-मिलीभगत।

एप्पल के शेयर धड़ाम

$ 75 अरब

का नुकसान हुआ है एप्पल कंपनी के शेयरों में एक ही दिन गुरुवार को गिरावट के चलते।